* श्रीअग्रदेवाचार्य्यकृत श्रीसम्बन्धपरत्व *

स्वस्ति श्रीमत्सम्पन्नाऽद्वैताऽमृतसागरा सच्चिदानन्दात्मिका गुणवती भगवती सत्सम्बन्धपवित्रसूत्रगुम्फितरसवती सम्मती दांपत्योल्लासविलाससारसुषमासिंधुप्रणालिका पालिका मोहांधकध्वांतधुरीन्द्रध्वंसनपरा कालिका मालिका वादावादविषादस्वादखादकधिया कुलटयाऽत्यन्तदुररुहा विजयते पत्रिका सुन्दरी सुन्दरी ॥

अर्थ—जो कल्याण, शोभा, सत्य आदि गुणों से संपन्न है, पुनः अद्वैत, अर्थात् जिसके सदृश पर अपर कोई वस्तु नहीं है और अमृत का अमुद्र है, पुनः सच्चिदानन्द स्वरूपिणी है, पुनः जो ज्ञान, ऐश्वर्य्य, वल, वीर्य्य, तेज और श्री इन गुणों से युक्त है अतः भगवती है, पुनः जो सत्यसम्बन्ध पवित्र है, अर्थात् असत्यलोक के स्त्रीपुत्रादि सम्बन्ध में जो प्रतीति है उस को दूर कर श्रीचक्रवर्तीकुमारजी से अपने द्वारा प्रीति बढ़ाती है अतः यह सम्बन्धपत्रिका पवित्र है, पुनः जो वेद के सूत्रों से वेष्टित है तथा रसरूपिणी अर्थात् रसमय है, पुनः जिसमें श्रुति और सब भगवज्जनों का अभिमत है, पुनः श्रीजनकलाड़िली जी और श्रीचक्रवर्तीकुमारजू के परस्परके उल्लास विलास सार सुषमा का जो समुद्र है तिसकी जो (पत्रिका) प्रणाली है अर्थात् जैसे नदी की प्रणाली खेत को सींच कर धान को पालन करती है तैसे ही यह (पत्रिका) भक्तों के हृदय रूपी

खेत को सींच कर प्रेम रूप धान को वृद्धि करती है, पुनः जो इस जीव के महाअंधकारमय मोह, अज्ञान और पञ्चक्लेश से संयुक्त सर्वदा अनन्त जन्मरूप बोझा ढोने वाली धूरि को विनाश करने में अति तत्परा है, पुनः काम, क्रोध, लोभ, मोह, और मात्सर्य रूप महिषासुर को मारने वाली साक्षात कालिका रूप है और मधुररसादि पञ्चरस रूप पञ्चरङ्ग की माला धारण किये है पुनः वादविवादजन्य जो विषाद है वही स्वादमय भोजन है जिनका ऐसे पुश्चलीबुद्धि वाले के लिये जो (पत्रिका) अति दुस्तरा है अर्थात् संसार अभिमुख बुद्धिवाले को प्राप्त होने में अत्यंत दुस्तरा है, ऐसी जो सुन्दरी से सुन्दरी पत्रिका वह सर्वोपरि सुशोभित है और अति उत्कृष्टि को प्राप्त है —इस प्रकार श्रीचक्रवर्तीकुमारजी से जीवों को वेद के सूत्रों से प्रतिपादित इन पञ्च प्रकार के नित्य संबन्ध की सूचना देने वाली जो यह पत्रिका है तिसका स्वरूप कथन किया गया ॥

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीता
राम सीताराम सीताराम सीताराम सीता
राम सीताराम सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम सीता
राम सीताराम
सीताराम